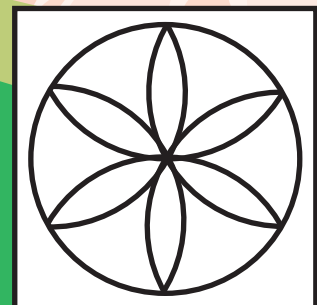
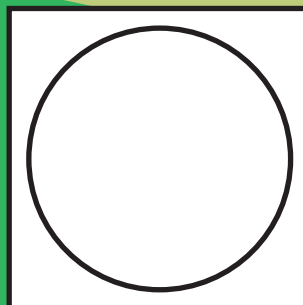
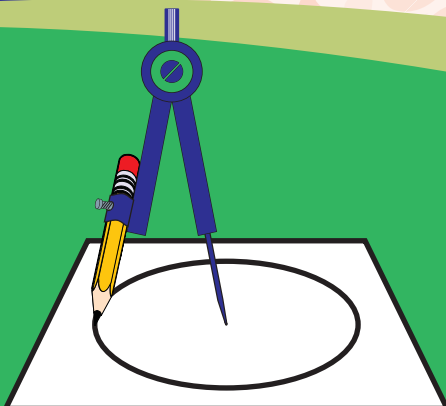
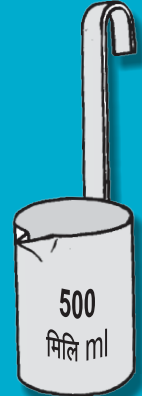


गणित

चौथी कक्षा



भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं/२०१४-१५/२१०१/मंजूरी/ड-५०५/७५४, दिनांक ४.२.२०१४

गणित

चौथी कक्षा



आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।



महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४

प्रथमावृत्ति : २०१४
सातवाँ पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ,
पुणे - ४११ ००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

गणित विषय समिति

डॉ शशिकांत अ. कात्रे (अध्यक्ष)
डॉ श्रीमती मंगला नारळीकर (सदस्य)
डॉ विनायक मा. सोलापूरकर (सदस्य)
डॉ सौ. वैजयंता पाटील (सदस्य)
डॉ के. सुब्रमण्यम (सदस्य)
श्री राजेंद्र गोसावी (सदस्य)
श्री प्रमोद तु. खर्चे (सदस्य)
श्रीमती मंगल पवार (सदस्य)
श्री वसंत ना. शेवाळे (सदस्य - सचिव)

गणित विषय कार्यगट सदस्य

डॉ. एम. एम. शिकारे
डॉ. कैलास बोंदार्डे
डॉ. जयश्री अत्रे
डॉ. अनिल वैद्य
श्री हेमंत देशपांडे
श्री नागेश मोने
श्री रवींद्र येवले
श्री पुरुषोत्तम शर्मा
श्री सुरेश शिंदे
कु. भारती ताठे
श्री कल्याण शिंदे
श्री प्रदीप गोडसे
श्री सुधीर नाचणे
श्री राजेश वैरागडे
सौ वैशाली पाटील
श्री मारुती बारस्कर

प्रमुख संयोजक : श्री वसंत ना. शेवाळे,
विद्यासचिव, भाषेतर
संयोजन सहायक : उज्ज्वला श्रीकांत गोडबोले
विषय सहायक, गणित
मुखपृष्ठ एवं सजावट : श्री विजयकुमार शिंदे,
इचलकरंजी
संदीप कोळी, मुंबई
भाषांतर संयोजन : डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी, हिंदी
संयोजन सहायक : सौ. संध्या वि. उपासनी
विषय सहायक, हिंदी
भाषांतरकार : श्री शालिग्राम एस. तिवारी
समीक्षक : डॉ. निलिमा मुळगुंद

निर्मिती : श्री सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिती अधिकारी
संजय कांबळे,
निर्मिती अधिकारी
श्री प्रशांत हरणे,
सहायक निर्मिती अधिकारी
अक्षरांकन : भाषा विभाग,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जी.एस.एम.क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/1,500
मुद्रक : SHARP INDUSTRIES,
RAIGAD

प्रकाशक

विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-
बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की
समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं
पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन
परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता
मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों
का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से
सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने
देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा
रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में
ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

‘राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप-२००५’ और ‘बालक को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-२००९’ सामने रखते हुए महाराष्ट्र राज्य द्वारा ‘प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२’ तैयार किया गया है।

इस शासनमान्य पाठ्यक्रम पर आधारित गणित विषय की पहली से आठवीं कक्षा की नवीन श्रृंखला, पाठ्यपुस्तक मंडल शैक्षणिक वर्ष २०१३-२०१४ से क्रमशः प्रकाशित कर रहा है। इस श्रृंखला की चौथी कक्षा की यह पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें विशेष आनंद की अनुभूति हो रही है।

संपूर्ण अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया बालकेंद्रित हो इसलिए कृतिप्रधान शिक्षण और ज्ञानरचनावाद पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा के अंत में विद्यार्थी न्यूनतम क्षमता प्राप्त कर सकें, साथ-साथ शिक्षण प्रक्रिया भी रोचक एवं आनंददायी हो, इस दृष्टिकोण को सामने रखकर इस पुस्तक की रचना की गई है।

विद्यार्थियों में चित्रों के प्रति प्राकृतिक रुचि तथा स्वतः कुछ करने की जिज्ञासा को ध्यान में रखकर इस पुस्तक को चित्ररूपी एवं कृतिप्रधान बनाने का प्रयत्न किया गया है। ये चित्र मुखर और गणितीय संकल्पनाएँ स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होंगे।

गणितीय संकल्पनाओं का पुनरावर्तन करने, उनका स्थिरीकरण करने तथा ‘स्वयं-अध्ययन’ सुलभ कराने की दृष्टि से पुस्तक में श्रेणीबद्ध (Graded) ‘स्वाध्याय’ एवं ‘संवादों’ को समाविष्ट किया गया है। अपेक्षा है कि स्वाध्याय के प्रश्न विद्यार्थी स्वयं प्रयत्नपूर्वक हल करें। स्वाध्यायों में विविधता लाने का प्रयत्न किया गया है ताकि वे उबाऊ और बोझिल न बन सकें।

प्रत्येक प्रकरण के संदर्भ में विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षकों से जिस भाषा के प्रयोग की अपेक्षा है, उसे पाठ्यपुस्तक में दिया गया है। संवादों के रूप में जिसका उपयोग विद्यार्थियों को गणित के अभ्यास में बारंबार करना पड़ता है; ऐसे गुणधर्म और नियमों को ‘ध्यान में रखो’ शीर्षक के अंतर्गत चौखट दिया गया है। अध्यापन को अधिक-से-अधिक कृतिप्रधान बनाने के लिए सूचनाएँ और उपक्रम भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक को अधिक निर्दोष एवं स्तरीय बनाने की दृष्टि से महाराष्ट्र के सभी भागों से चुने हुए शिक्षकों, कुछ शिक्षणतज्ञों तथा विषयतज्ञों से पुस्तक की समीक्षा कराई गई है। इस पुस्तक को तैयार करते समय शिक्षकों एवं अभिभावकों की ओर से आए पत्रों तथा समाचारपत्रों के माध्यम से छपकर आए टीकात्मक परीक्षणों में दी गई सूचनाओं पर विचार किया गया है। इन सभी द्वारा किए गए सहयोग के लिए मंडल उनका आभारी है। गणित विषय समिति द्वारा प्राप्त सूचनाओं तथा अभिप्रायों पर यथोचित विचार करके इस पुस्तक को अंतिम स्वरूप दिया गया है। मंडल की गणित विषय समिति, कार्यगट, श्री वि.दि. गोडबोले (निमंत्रित) तथा चित्रकार के आस्थामय परिश्रम से यह पुस्तक तैयार हुई है। मंडल इन सभी का मनःपूर्वक आभारी है।

आशा है कि विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे।

(चं. रा. बोरकर)

संचालक

पुणे

दिनांक : ३ फरवरी, २०१४

१४ माघ, १९३५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व

अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

गणित अध्ययन निष्पत्ति : चौथी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति																											
<p>विद्यार्थी/अध्ययनकर्ता को अकेले/जोड़ी में/समूह में अवसर देकर कृति करने के लिए प्रेरित करना ।</p> <ul style="list-style-type: none"> ● गुणधर्मों के अनुसार संख्याओं का वर्गीकरण करना । जैसे - सम-विषम । ● गुणन से पहाड़े बनाने की विभिन्न पद्धतियों की खोज करना । जैसे - टप्पे पर संख्याएँ गिनना, आकृतिबंध का विस्तार करना आदि । जैसे ३ का पहाड़ा बनाने के लिए विद्यार्थी टप्पों से गिनती करेंगे अथवा जोड़ की पुनरावृत्ति या निम्नानुसार आकृतिबंध तैयार करेंगे - <table style="margin-left: 20px; border-collapse: collapse;"> <tr><td>१</td><td>२</td><td>३</td></tr> <tr><td>४</td><td>५</td><td>६</td></tr> <tr><td>७</td><td>८</td><td>९</td></tr> <tr><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td></tr> <tr><td>-</td><td>-</td><td>-</td></tr> <tr><td>-</td><td>-</td><td>-</td></tr> </table> <ul style="list-style-type: none"> ● दो अंकों वाली संख्याओं का विस्तार और गुणा: उदा. २३×६ को निम्नानुसार हल किया जा सकता है । $२३ \times ६ = (२० + ३) \times ६$ $= २० \times ६ + ३ \times ६ = १२० + १८ = १३८$ ● दैनंदिन व्यवहार के उदाहरण हल करना तथा बनाना । जैसे - एक पेन का मूल्य ३५ रुपये हैं तो ७ पेनों का मूल्य कितना ? ● गुणन क्रिया के चरणों की निर्मिति करके चर्चा करना । ● भाजक के लिए समूह बनाना । जैसे - $२४ \div ३$ अर्थात् २४ में ३ के कितने समूह बनते हैं अर्थात् ३ के कितने समूह से २४ बनते हैं । <table style="margin-left: 20px; border-collapse: collapse;"> <tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr> <tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr> </table> <ul style="list-style-type: none"> ● गणितीय विधानों के लिए संदर्भानुसार प्रश्न तैयार करना । जैसे - $२५ - १० = १५$ इससे अलग-अलग विद्यार्थियों द्वारा अलग-अलग प्रश्न बनाए जा सकते हैं । कोई लड़का कहेगा, “मेरे पास २५ सेब थे । उनमें से १० सेब खाए तो कितने बचे ?” ● समूह के कार्य से संदर्भ के अनुसार उदाहरण तैयार करना । जैसे-कक्षा के विद्यार्थियों के दो गुट बनाना । प्रत्येक गुट दूसरे गुट द्वारा दिया गया प्रश्न हल करते समय गणितीय संक्रिया करेगा । ● $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{३}{४}$ इन भिन्नो का अर्थ तथा उनके पारस्परिक संबंध पर चर्चा करना । ● चित्र/कागज को मोड़कर उनके आधार पर भिन्नवाली संख्या दर्शाना । <table style="margin-left: 20px; border-collapse: collapse;"> <tr><td></td></tr> </table> <ul style="list-style-type: none"> ● जैसे - आकृति का $\frac{१}{२}$ हिस्सा रँगना । ● किस आकृति का रंगीन हिस्सा $\frac{१}{४}$ नहीं दर्शाता । <p>(i) </p> <p>(ii) </p>	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	-	-	-	-	-	-										<p>विद्यार्थी -</p> <p>04.71.01 संख्याओं की संक्रियाओं का उपयोग दैनिक जीवन में करते हैं ।</p> <p>04.71.02 सम-विषम संख्याओं का वर्गीकरण करते हैं ।</p> <p>04.71.03 २ तथा ३ अंकों की संख्याओं को गुणा करते हैं ।</p> <p>04.71.04 एक संख्या से दूसरी संख्या को विभिन्न तरीकों से भाग देते हैं । जैसे -</p> <ul style="list-style-type: none"> — चित्रों द्वारा (बिंदुओं का आरेखन कर), — बराबर बाँटकर, — भाग तथा गुणा के अंतर्संबंधों का उपयोग करते हैं, — बार-बार घटाकर । <p>04.71.05 दैनिक जीवन के संदर्भ में मुद्रा, लंबाई, भार, धारिता से संबंधित चार संक्रियाओं पर आधारित प्रश्न बनाते हैं तथा हल करते हैं ।</p> <p>04.71.06 भिन्नो पर कार्य करते हैं ।</p> <ul style="list-style-type: none"> - कागज मोड़कर/काटकर, दिए गए चित्र अथवा वस्तुओं के समूह में से आधा, एक चौथाई, तीन चौथाई भाग को पहचानते हैं । - एक चौथाई, आधा और पौना हिस्सा क्रमशः $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{२}$, $\frac{३}{४}$ इन चिह्नों द्वारा दर्शाते हैं । - $\frac{१}{२}$ तथा $\frac{२}{४}$ जैसे अन्य भिन्नो की सममूल्यता दर्शाते हैं । <p>04.71.07 आसपास दिखाई देनेवाले आकार समझ लेते हैं ।</p> <p>04.71.08 वृत्त के केंद्र, त्रिज्या तथा व्यास को पहचानते हैं ।</p> <p>04.71.09 उन आकृतियों को खोजते हैं जिनका उपयोग टाइल लगाने में किया जा सकता है ।</p> <p>04.71.10 दिए गए प्रतिरूपों की मदद से घन/घनाभ बनाते हैं ।</p> <p>04.71.11 साधारण वस्तुओं के शीर्ष दृश्य (Top View), सम्मुख दृश्य (Front View), साइड दृश्य (Side View) आदि का चित्रांकन करते हैं ।</p> <p>04.71.12 दी हुई आकृति को इकाई मानकर सरल ज्यामितीय आकृतियों (त्रिभुज, आयत, वर्ग) का क्षेत्रफल तथा परिमिति ज्ञात करते हैं जैसे - किसी टेबल का ऊपरी हिस्सा पूर्णतः ढँकने के लिए लगने वाली पुस्तकों की संख्या ।</p> <p>04.71.13 मीटर को सेंटीमीटर एवं सेंटीमीटर को मीटर में बदलते हैं ।</p> <p>04.71.14 किसी वस्तु की लंबाई, दो स्थानों के बीच की दूरी, विभिन्न वस्तुओं के भार, द्रव का आयतन आदि का अनुमान लगाते हैं तथा वास्तविक माप द्वारा उसकी पुष्टि करते हैं ।</p> <p>04.71.15 दैनिक जीवन में लंबाई, दूरी, वजन, आयतन तथा समय से संबंधित प्रश्नों को चार मूलभूत गणितीय संक्रियाओं का उपयोग कर हल करते हैं ।</p>
१	२	३																										
४	५	६																										
७	८	९																										
१०	११	१२																										
-	-	-																										
-	-	-																										

- परकार की सहायता से अलग-अलग त्रिज्यावाले वृत्त बनाना तथा उस आकार से विभिन्न डिजाइन खोजना ।
- घर/पदपथ/जमीन पर टाइलों के डिजाइन के निरीक्षणों की चर्चा करना ।
- अपने स्वयं की टाइल का डिजाइन बनाना और ये टाइलें एक-दूसरे में गुंथी जाती हैं क्या इसकी पड़ताल करना ।
- कक्षा की विभिन्न वस्तुओं का विभिन्न कोणों से निरीक्षण करना और उनके चित्र बनाना । जैसे - गिलास सामने से देखने पर कैसा दिखाई देता है । ऊपर से देखने पर कैसा दिखाई देता है ? अथवा नीचे से देखने पर कैसा दिखाई देगा ? इस प्रकार के प्रश्न उपस्थित करना ।
- रुपयों को पैसों में परिवर्तित करना । जैसे - २० रुपयों के बदले में ५० पैसों के कितने सिक्के मिलेंगे ?
- बिल बनाना, बिल बनाते समय जोड़, घटाव, गुणा, भाजन इन चारों गणितीय क्रियाओं का प्रयोग किया जाएँ ।
- पहले वस्तु की लंबाई/दूरी का अनुमान लगाना और बाद में प्रत्यक्ष रूप में नापकर पड़ताल करना । जैसे - उनके बिछाने की लंबाई, विद्यालय के प्रवेश द्वार से कक्षा तक की दूरी का अनुमान लगाकर प्रत्यक्ष गिनकर पड़ताल करना ।
- तराजू बनाकर वस्तुओं का भार मानक वजनों से गिनना । वजन उपलब्ध न होने पर वस्तुओं की बंद थैलियाँ जैसे - $\frac{1}{2}$ किलोग्राम दाल का पैकेट, २०० ग्राम का नमक का पैकेट, १०० ग्राम के बिस्कुट का पैकेट आदि प्रयोग करके तौलना ।
- ५०० ग्राम भारवाले पैकेट के बदले २५० ग्राम के दो पैकेट्स (अथवा समान भारवाले कंकड़ आदि) का प्रयोग करके वजन करना और इस प्रकार की नई-नई युक्तियों का प्रयोग करना ।
- उनका अपना मापने का बर्तन बनाना । जैसे - २०० मिली धारिता की बोतलें, जग (Jug)/लोटे का पानी मापने के लिए करना ।
- दिनदर्शिका का निरीक्षण तथा अध्ययन करके महिने/वर्ष के सप्ताह ज्ञात करना । विद्यार्थियों को प्रत्येक महिने के दिनों का आकृतिबंध ढूँढ़ने देना । दिवस तथा महिनों की तिथियों के बीच का संबंध ढूँढ़ने देना ।
- उनकी कक्षा के/कक्षा के बाहर वाले अनुभव ध्यान में रखते हुए मित्रों के साथ बिताया समय बताना, घड़ी का वाचन घंटे तथा मिनटों में बताने देना ।
- किसी एक घटना के लिए लगने वाला समय गिनकर अथवा घटाव/जोड़ करके ज्ञात करना ।
- आसपास के परिवेश में पाए जाने वाले आकृतिबंध/डिजाइन ढूँढ़ना (विविध आकार तथा संख्याओं का प्रयोग करके) और इस प्रकार के आकृतिबंध बनाना और उनका विस्तार करना ।
- दैनिक जीवन में प्राप्त जानकारियों का संग्रह करके अर्थपूर्ण अनुमान निकालना । इन अनुभवों के आधार पर सूचना व्यवस्थापन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए विद्यार्थियों को सहभागी कराना ।

- 04.71.16 घड़ी के समय को घंटे तथा मिनट में पढ़ सकते हैं तथा उन्हें मध्याह्नपूर्व (a.m.) और मध्याह्नोत्तर (p.m.) के रूप में व्यक्त करते हैं ।
- 04.71.17 २४ घंटे की घड़ी को १२ घंटे की घड़ी से संबंधित करते हैं ।
- 04.71.18 दैनिक जीवन की घटनाओं में लगने वाले समय अथवा अंतराल की गणना, आगे/पीछे गिनकर अथवा जोड़ने/घटाने के माध्यम से करते हैं ।
- 04.71.19 गुणा तथा भाग में आकृतिबंध की पहचान कर सकते हैं । (९ के गुणज तक)
- 04.71.20 चित्रालेख से अनुमान लगाते हैं ।

अनुक्रमणिका

विभाग पहला

विभाग दूसरा

१.	भूमितीय आकृतियाँ	१	९.	शाब्दिक प्रश्न : जोड़ - घटाव	४७
२.	संख्याज्ञान	७	१०.	भिन्न	५१
३.	जोड़	१८	११.	मापन	५९
४.	घटाव	२३	१२.	परिमिति तथा क्षेत्रफल	७०
५.	गुणा करना (गुणन) : भाग १	२९	१३.	गुणा करना (गुणन) : भाग २	७५
६.	भाग देना (भाजन) : भाग १	३२	१४.	भाग देना (भाजन) : भाग २	७९
७.	सिक्के तथा नोट	३९	१५.	चित्रालेख	८३
८.	कालमापन	४३	१६.	प्रतिरूप (आकृतिबंध)	८७

शिक्षकों के साथ आवश्यक बातें

पाठ्यपुस्तक केवल एक साधन है। इस दृष्टि से अपने परिसर के विभिन्न अनुभवों और विद्यार्थियों के स्वयं के अनुभवों का उपयोग करके अध्यापन करें -

- खेलों, गीतों-कहानियों, प्रत्यक्षदर्शनों तथा उपक्रमों इत्यादि की सहायता से गणितीय संकल्पनाओं को स्पष्ट करें।
- विद्यार्थी स्वयं कैसे सीख सकते हैं, उन्हें ज्ञात जानकारी का उपयोग करके, सीखने में उनकी किस प्रकार सहायता की जा सकती है, इस दृष्टिकोण से अध्यापन करें। इसके चित्र चित्रकार्ड, संख्याकार्ड तथा मनकों की माला जैसी विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग करें।
- सामान्य रूप में प्रतिदिन एक पृष्ठ पर दिए गए पाठ्यांश के संदर्भ द्वारा अध्ययन-अनुभव करवाएँ।
- विद्यार्थियों के साथ चर्चा करें। स्पष्टीकरण दें। स्पष्ट सूचनाएँ दें।
- विद्यार्थियों द्वारा कृति करते समय, समूहों के पास प्रत्यक्ष जाकर शिक्षक द्वारा कृति का निरीक्षण किया जाए। जहाँ आवश्यक हो, वहाँ मार्गदर्शन भी किया जाए।
- बीच-बीच में पहले से पूर्ण किए गए पाठ्यांश पर आधारित विचार उत्तेजक प्रश्न पूछकर, उत्तर देने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें।
- कठीन लगने वाले प्रश्न पूछने के लिए भी विद्यार्थियों को प्रेरणा दें। उनमें प्रश्न पूछने की आदत का विकास करें।